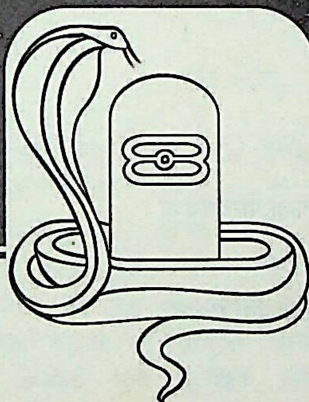
श्री शिव शतक

ब्रह्मर्षि विश्वात्मा बावरा





श्री शिव शतक



ब्रह्मर्षि विश्वात्मा बावरा



दिव्यालोक प्रकाशन

ब्रह्मर्षि आश्रम, विराट् नगर, पिंजौर (हरियाणा)

प्रकाशक :
दिव्यालोक प्रकाशन
ब्रह्मर्षि आश्रम, विराट् नगर,
पिंजौर (हरियाणा)
दूरभाष : ०१७३३/६५१७०

सम्पादन : ब्रह्मऋता परिव्राजिका

शब्द संयोजन : अर्जुन, राजीव

प्रथम संस्करण : मई १९९१
द्वितीय संस्करण : मई १९९९

प्रतियां : २१००

मूल्य : 20/- रुपये

मुद्रक :
ब्रह्मर्षि बावरा प्रिंटिंग प्रैस
विराट् नगर, पिंजौर (हरियाणा)

दो शब्द

कृपा सिन्धु सुख धाम साम्ब शिव जग पितु माता।
आरत पाहि पुकार करत हे विश्व विधाता॥
हे अशरण के शरण देव दीनन हितकारी।
हे अनाथ के नाथ देखु जग दशा निहारी॥
वेद कहत हौं अंश तव विनय करौं निज मानि कै।
देऊ अभय वर बावरहि जायो अपनो जानि कै॥
देखु दयामय दुनी दुःखित अति दीन पुकारै।
लिये त्राण की आस नाथ की ओर निहारै॥
भयो धर्म को ह्रास त्रास सज्जन उर भारी।
जन जीवन पर राज करत हैं पापाचारी॥
आइ सम्भालो सुतन्ह को पाप ताप को करि शमन।
विनय बावरा की सुनऊ विश्वनाथ गिरिजारमन॥

करुणानिधान भगवान् साम्ब सदाशिव के परम पुनीत पतित पावन श्रीचरणाविंदों का स्मरण करते हुये उनकी दिव्य महिमा का चिन्तन, मनन् और उसका गान कर अनादि अविद्या प्रवाह में पड़ा हुआ यह जीव समस्त यातनाओं से विमुक्त हो शाश्वत शिव पद को प्राप्त करने का अधिकारी हो जाता है। इस भवार्णव में भटकते हुये जीव के लिए एकमात्र शिव ही शान्ति का परमाश्रय हैं। मानव मन का ऐसा स्वभाव है कि जिसकी महिमा को वह स्वीकार कर लेता है उसमें उसकी सहज अनुरक्ति हो जाती है। सामान्य स्थिति में दृश्य जगत् को देख कर इसमें जो कुछ

भी सत्य, शिव, सुन्दर प्रतीत होता है उसी में वह अनुरक्त हो जाया करता है। किन्तु यह अनुरक्ति उसकी स्थायी नहीं होती क्योंकि दृश्य जगत् का कोई ऐसा पदार्थ नहीं जो सदा एक स्थिति में रह सके। प्रकृति का स्वभाव ही परिवर्तनशील है। उसमें स्थायित्व की कल्पना भ्रान्ति मात्र है, अतः परिवर्तनशील प्रकृति में शाश्वत शिव और सौन्दर्य की भी अनुभूति नहीं हो पाती इसलिए मानव मन एक पदार्थ को छोड़कर दूसरे पदार्थ की ओर आकर्षित होता रहता है। इस आकर्षण के पीछे प्रकृति के प्रकाशक की सत्ता ही कारण होती है, किन्तु अबुध जीव उस प्रकाशक को जान नहीं पाता। जैसा कि यजुर्वेद के एक मन्त्र में इस सत्य को उद्घाटित करते हुये ऋषि कहता है-

हिरण्मयेण पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्।

सुनहले पात्र से सत्य का मुख ढका हुआ है। यह सुनहला पात्र त्रिगुणात्मिका प्रकृति का विचित्र आवरण है। दूसरे शब्दों में इसे परमेश्वर की पराशक्ति का आवरण भी कह सकते हैं; जिसके पीछे विराजित शक्तिमान् दिखाई नहीं देता और यह जीव उस स्वर्णिम आवरण से विमुग्ध हो उसी की छाया को पकड़ने का प्रयत्न करता रहता है किन्तु परिणाम में उसे निराशा के सिवा कुछ प्राप्त नहीं होता। साम्ब सदाशिव की आराधना, उपासना और प्रार्थना.से ही यह साधक जीव उस आवरण के परे, जो यथार्थतः सत्य, शिव और सुन्दर है, उसको देख पाता है, जान पाता है। क्योंकि आराधक पर अनुकम्पा करके वह परमेश्वरी स्वयं ही अपने आवरण को समेट लेती है और उसे परमेश्वर का साक्षात्कार करा देती है। केनोपनिषद् के यक्ष प्रसंग से इस परम सत्य का उद्घाटन हो जाता है कि हेमवती उमा की अनुकम्पा के अभाव में देवेन्द्र भी उस परम सत्य का बोध नहीं प्राप्त कर सके तो जन-सामान्य की बात ही क्या! परमेश्वरी की अनुकम्पा को प्राप्त करने के लिए उसके प्राणेश्वर परमेश्वर की महिमा का चिन्तन और गान ही श्रेष्ठतम उपाय है। जीव में ऐसी

कोई क्षमता नहीं कि वह अपने प्रयत्न द्वारा प्रकृति के आवरण को हटा कर परमेश्वर का साक्षात्कार करके कृत्कृत्य हो सके। उसके पास साधन रूप से जो कुछ भी उपलब्ध है, वह तो करुणेश्वरी का करुणा प्रसाद मात्र ही है। अत: जिज्ञासु साधक के लिए आर्तभाव से साम्ब सदाशिव के गुणों का चिन्तन और गान करते हुए उनकी कृपा दृष्टि को प्राप्त करने के लिए उनकी ओर निहारते हुये उन्हें पुकारने के सिवा और कोई दूसरा उपाय नहीं है। यहाँ पर यह प्रश्न हो सकता है कि भगवान् शिव की आराधना तो ठीक है किन्तु साम्ब सदाशिव की आराधना के सम्बन्ध में मैं इतना जोर क्यों देता हूँ। मेरे विचार से पिता की अपेक्षा बालक के जीवन में माँ का स्थान परम श्रेष्ठ होता है। अम्बा के सहित शाश्वत शिव की आराधना ही श्रेयस्कर है; इसी को शिवपुराण में पूर्ण ब्रह्म की आराधना बताया गया है। अम्बा से रहित शिव की आराधना अधूरी है उसी प्रकार से शिव से रहित अम्बा की आराधना भी अधूरी कही जाती है। जैसे केवल माता वा केवल पिता के सान्निध्य में शिशु का पूर्ण विकास नहीं हो पाता, उसके पूर्ण विकास के लिए माता-पिता के वरद् हस्त का होना परमावश्यक होता है, उसी प्रकार से वह परमेश्वरी समस्त जीवों की जननी है, वेद, पुराण, शास्त्र सभी एकमत से इस सत्य को उद्घोषित करते हैं और परमेश्वर ही जीवों के सच्चे पिता हैं। गीता के १४वें अध्याय में भगवान् ने बड़े ही स्पष्ट शब्दों में इस सत्य का उद्घाटन किया है-

मम योनिर्महद्ब्रह्म तस्मिन्गर्भं दधाम्यहम्।
सम्भवः सर्वभूतानां ततो भवति भारत॥
सर्वयोनिषु कौन्तेय मूर्तयः सम्भवन्ति याः।
तासां ब्रह्म महद्योनिरहं बीजप्रदः पिता॥

"यह महद् ब्रह्म अर्थात् मेरी परा प्रकृति समस्त जीवों का जन्म स्थान है, उसमें मैं अपने तेजांश को स्थापित करता हूँ। उसी से समस्त जीवों का आविर्भाव होता है। अनन्त जीवों के जो अनन्त रूप हैं, उसमें मेरी

यह परा प्रकृति ही कारण है इसलिए यह प्रकृति समस्त जीवों की माँ है और उस परा प्रकृति में अपना चिदांश से गर्भाधान कराने वाला मैं समस्त जीवों का पिता हूँ।'' गीता की यह घोषणा उपनिषदों के गूढ़तम रहस्यों को उद्घाटित करती है और यही बात शिवपुराण में समझाई गई है। अभिप्राय यह है कि साम्ब सदाशिव ही जीव और जगत् के आदि कारण हैं और उन्हें ही उपनिषदों में ब्रह्म शब्द से अभिहित किया गया है। दूसरे शब्दों में शक्ति सहित शिव की आराधना ही पूर्ण ब्रह्म की आराधना है और वही जन्म, मृत्यु, जरा , व्याधि रूप दुःख के प्रवाह में प्रवाहित होने वाले इस जीव के लिए सुख-शान्ति और विश्राम का एकमात्र अवलम्बन है।

इस शिव शतक में औपनिषदिक ब्रह्म की साम्ब सदाशिव के रूप में वन्दना की गई है और उनकी पावन महिमा का गान किया गया है। साथ-2 शास्त्रगत सूक्ष्मतम सत्य सिद्धान्तों को सरल भाषा में काव्य रूप से जिज्ञासु साधकों के लिए सुलभ और सुगम बनाने की चेष्टा की गई है। जो कुछ भी इस शिव शतक में पढ़ने को मिलेगा वह केवल शास्त्रीय सिद्धान्त ही नहीं बल्कि साधना की उच्चतम अवस्था की अनुभूति से भी सम्बन्धित है। विश्वास है कि जिज्ञासु साधक इन पदों के चिन्तन, मनन के साथ इनमें निहित भावों को ग्रहण कर अपनी साधना को सफल बनाने में सक्षम हो सकेंगे। इन पदों के पठन-पाठन व अध्ययन से उन्हें साधना में बल मिलेगा। मैं हृदय से करुणानिधान भगवान् साम्ब सदाशिव के श्रीचरणार्विन्द में प्रार्थना करते हुये यही याचना करता हूँ कि इस घोर कलिकाल में अनादि अविद्या ग्रसित जीवों के कर्मों की तरफ ध्यान न देकर अपनी करुणा से ही उन्हें कल्याण पथ पर अग्रसर होने की प्रेरणा प्रदान करें और अपनी अनुकम्पा से ही उन्हें सुख और शान्ति का भाजन बनावें। इसी मंगलकामना के साथ आप सभी का शुभेच्छु—

विश्वात्मा बावरा



श्री गणेशाय नमः

ॐ नमः शिवाय

श्री शिव शतक

नमो हेरम्ब अम्ब लाडिले लड़ैते लाल।
देवपूज्य प्रथम दुलारे शिवदानी को॥
मंगल की मूरति विशाल गज सूरति को।
कोटिन्ह नमन गणपति गुणखानि को॥
संकट हरत दुःख दारिद दरत बुद्धि।
बोध से भरत सुमिरत अवधानी को॥
ज्ञान बल वृद्धि करि काज सब सिद्धि करैं।
बावरा नमत नित सुवन शिवानी को॥ 1॥

परब्रह्म परम प्रकाश पराशक्ति संग।
प्रगट्यो अलिंग लिंग रूप महाकाश में॥
आदि अंतहीन मध्यहीन है अखंड ज्योति।
हेतु भो अनन्त ब्रह्माण्ड के विकास में॥
साम्ब सदाशिव के त्रिदेव देव अंशभूत।
भूत महाभूत जग उपज्यो सकाश में॥
ईशन को ईश परमेश पद पंकज में।
बावरा नमत नित अमित उल्लास में॥ 2॥

देव हैं निरंजन पै अंजन सकाश पाइ।
भुवन अनन्त पल मांहि रचि देत है॥
प्रभु के प्रकाश मांहि त्रिगुण पेटारी खोलि।
जगत् बनाइ के सजाइ धरि देत है॥
शक्ति शक्तिमान से अभिन्न भिन्न रूपधारि।
नाम रूप विविध पसार करि देत है॥
नाथ हैं असंग संग अम्बिका प्रसंग लाइ।
बावरे निहारि नेक ताहिं [illegible] देत है॥ 3॥

श्रुति के शृंगार सार सृष्टि के आधार देव।
करुणावतार करै ताप त्रय शमन हैं॥
कण्ठ विषधारिबे को त्रिपुर संहारिबे को।
देव दुःख दारिबे को गिरिजा रमन हैं॥
कृपा के समुद्र रौद्र रूप दुष्ट दानव को।
भक्तभय हारी मद मार के दमन हैं॥
बावरे पसीजि राम नाम सुनि रीझि जात।
ईश पद पंकज में कोटिन्ह नमन हैं॥ 4॥

नाथ हैं अघोर घोर भव से उबारि जन।
सुबस बसाइ लेत अपनी शरण में॥
जरत हलाहल सो व्याकुल विलोकि लोक।
लायो न विलम्ब देव करुणा करन में॥
महाविष पाइ कंठ भूषण बनाई लियो।
जग को बचाइ लियो आइ एक क्षण में॥
गरल शृंगार भयो सुजस त्रिलोक छायो।
बावरा नमत नित मंगल चरण में॥ 5॥

पिता परमेश मातु अम्बिका अनन्त लोक।
जीव ये अनन्त देव संतति तुम्हारी हैं॥
यावत विरंचि लघु जंतु पर्यन्त सभी।
तेरे शुचि स्नेह के समान अधिकारी हैं॥
तोसों समरथ हेतु रहित हितैषी पाइ।
तऊ जग जीवन सहत दुख भारी हैं॥
बावरा व्यथित अति दुनी की दशा निहारि।
कहा कहै नाथ सर्वज्ञ त्रिपुरारी हैं॥ 6॥

नाथ हैं त्रिलोचन त्रिविध ज्योति पुंज रूप।
भानु शशि पावक के कारण स्वरूप हैं॥
प्रभु के प्रकाश से प्रकाशित नक्षत्र सारे।
भुवन अनन्त देव अमित अनूप हैं॥
भासित प्रपंच में विभासित हैं तत्त्व जेते।
सभी तव तेज के आभास अणु रूप हैं॥
बावरे आलोक लोकपाल सुर लोकन्ह के।
आपु परमेश्वर परावर के भूप हैं॥ 7॥

निरालम्ब नाथ अवलम्ब हैं चराचर के।
प्रणत अनाथ को सनाथ करि देत हैं॥
फूल पात पानी कोऊ प्रेम से चढ़ाइ देत।
ताको सुख सम्पति से घर भरि देत हैं॥
पतित अपावन को पावन बनाइ देव।
आरत पुकार सुनि ताप हरि लेत हैं॥
पाप के प्रमोचन को बिपति विमोचन को।
बावरे के नाथ नाथ करुणा निकेत हैं॥ 8॥

पंचमहाभूत जीवभूत नाम रूप जेते।
जगत प्रपंच के आधार भूतनाथ हैं॥
सगुण स्वरूप विश्व रुप में विराजि रह्यो।
गुणातीत अगुण अलेप विश्वनाथ हैं॥
सृष्टि को पसारि पालि आपु में समेटि लेत।
करैं नित्य खेल नाथ अम्बिका के साथ हैं॥
बावरा निहारि कार्य कारण स्वरूप देव।
करत प्रणाम कोटि नाइ महि माथ हैं॥ 9॥

शीश जटाजूट गंग पावन धवलधार।
बाल चन्द्रभाल त्रय ताप पाप हारी को॥
कानन विशाल कल कुंडल झलकि रह्यो।
भवभय मोचन त्रिलोचन पुरारी को॥
सुषमा अपार कोटि मार छवि छीनि लेत।
अरुण अधर मृदु हास मदनारी को॥
धरिके त्रिपुण्ड पुण्यदान करै दासन्ह को।
करत निहाल देखि बावरे भिखारी को॥ 10॥

शोभित गरल कंठ गर को शृंगार बनि।
गौर वरन गिरिनाथ गौरि पति को॥
अहि अंग भूषण विभूषण विभूति तनु।
मूरति विशाल छालधारी मृगपति को॥
कर में त्रिशूल भवशूल को हरनहार।
डमरु निनाद नाद ब्रह्म उतपत्ति को॥
बावरे प्रशान्त रूप करुणावतार प्रभु।
भयो गिरि संत जगदाता शुभ गति को॥ 11॥

सत्य है परम तत्त्व कारण स्वरूप नित्य।
भुवन कटाह जामें उपजि समात है॥
शिव चित चेतन समुद्र से तरंग रूप।
जनमें अनन्त जीव जगत जंमात है॥
सुन्दर सकल सुख स्रोत है आनन्द घन।
सोई रसरूप परब्रह्म कहि जात है॥
सत्य शिव सुन्दर त्रिविध भाव तत्त्व एक।
बावरा समुझि जिय जरनि जुड़ात है॥ 12॥

प्रकृति प्रवाह चित्र भासत विचित्र रूप।
सोई बनि पाश जग जीव को गहत है॥
चिद अंश शिव को स्वरूप भ्रम भाजन ह्वै।
जनमि मरत बहु सांसति सहत है॥
बोध से विहीन पराधीन पशु भाव धारी।
भूलि निज भाव भवधार में बहत है॥
पशुपति नाथ पद पंकज शरण जाइ।
बावरे नसाइ पाश निगम कहत है॥ 13॥

अलख अरूप ब्रह्म सगुण स्वरूप शिव।
नाम है निरंजन पै अंजन धरत हैं॥
त्रिगुण प्रवाह से उबारि लेत पल मांहि।
शिवापति स्वामी जा पै करुणा करत हैं॥
देव दीनबन्धु दुःख दूरि करैं दासन्ह को।
अधम अनाथ देखि अवढर ढरत हैं॥
कृपा के निधान प्रभु आरत पुकार सुनि।
बावरे निहारि त्रयताप को हरत हैं॥ 14॥

देवन्ह को देव महादेव करुणानिधान।
सुमिरे सकृत भवत्रास हरि लेत हैं॥
शंकर स्वरूप ध्याइ बिलव पत्र को चढ़ाइ।
करत प्रणाम सों निहाल करि देत हैं॥
अबुध अनारि पाहि शरण पुकारयो आइ।
लेत अपनाइ ताहि बोध भरि देत हैं॥
बावरे के नाथ भोलानाथ हैं दयालु ऐसे।
एक फल याचक को चारि फल देत हैं॥ 15॥

सत् चिदानन्द शिव शक्ति को स्वरूप नित्य।
सृष्टि औ प्रलय ताको सहज विलास है॥
अमित आलोक लोक दिव्य औ अदिव्य जेते।
जगत् अनन्त साम्ब शिव को प्रकाश है॥
एक अखिलेश्वर विविध भाव भासि रह्यो।
मातु पितु रूप मानो पुहुमि आकाश है॥
बावरे समुझि सुनि निगम कहानी सदा।
राजत अनेक मांहि एक को आभास है॥ 16॥

करुणानिधान शिव सृष्टि के आधार देव।
शंकर स्वरूप ताको पालना करत है॥
नाथ हैं अकाल काल कलना अतीत सदा।
महाकाल रुद्र रूप धारि संहरत है॥
एक से अनेक को पसारि जग क्रीड़ा करि।
आपु ही समेटि के एकाकी विहरत है॥
कृपा कोप भाव तव लीला के विभाव देव।
बावरे विचारि रोम रोम सिहरत है॥ 17॥

करुणानिधान परमेश्वर पिनाक पाणि।
सुरासुर दोऊ के समान हितकारी हैं॥
रीझि वरदाता सुख सम्पति सजाइ देत।
खीझ के बनाई देत मोक्ष अधिकारी हैं॥
सोई गुणवान जग चतुर सुजान सोई।
जापै उमानाथ होत करुणा तुम्हारी है॥
चाह सुरलोक परलोक की न परवाह।
तेरी दयादृष्टि हेतु बावरा भिखारी है॥ 18॥

नमो शूलपाणि देव दनुज मनुज नाग।
सभी सुख पावैं सदा तुम्हरी शरण में॥
पापी पुण्यवान मतिहीन हो सुजान कोऊ।
राखत न भेद नाथ करुणा करण में॥
अमित उदार भोलानाथ हैं अनाथ नाथ।
करें न विलम्ब अघ ओघ के हरण में॥
बाप भवताप से बचाइ लेहु बावरहिं।
चाहत सुठांव नित नाथ के चरण में॥ 19॥

शिव को प्रकाश जीव जाइ मोहपाश पर्यो।
वासना विलास आस जनमि मरत है॥
अबुध अजान निज रूप को न ज्ञान नेकु।
छाया को न भान प्रतिछाया को धरत है॥
साधक न एक बन्यो बाधक अनेक जग।
ताको हित मानि भवजाल में परत है॥
बावरे अनाथ को हैं नाथ विश्वनाथ एक।
जाकी दयादृष्टि सब आपदा हरत है॥ 20॥

नमन अनन्त भगवंत पद पंकज में।
मोह तम नाशक प्रकाशक पुरारि को॥
शिवापति पलक उठाइ के निहारि लेहु।
वासना विनाशी देहु शरण पुजारी को॥
यही उर आस प्रभु करुणा की प्यास लिए।
ओट एक नाथ तव अबुध अनारी को॥
महिमा महान् नित निगम बखान करै।
देहु अभयदान देव बावरे भिखारी को॥ 21॥

चिन्तन करत चित्त ईश पद पंकज को।
अम्बिका सहित गणपति लिए गोद में॥
मानो बोध बुद्धि युत आत्मा विराजि रह्यो।
परम प्रसन्न निज सहज प्रमोद में॥
देखत त्रयम्बक को अम्बक सफल होत।
पाप ताप हरत निहारत विनोद में॥
बावरे सुमिरि शिव गिरिजा गणेश नित्य।
अर्चन करत सदा रहत आमोद में॥ 22॥

नाथ त्रिपुरारी हैं त्रिलोचन त्रिपुण्ड धारि।
कुंडल कपोल लोल लागत सुहावनो॥
उर अहिराज बनि भूषण विराजि रह्यो।
अम्बर बाघम्बर को मुनि मन भावनो॥
चिन्तन करत सुख शान्ति से भरत चित्त।
सुमिरे सुनाम पाप ताप को नसावनो॥
पूजा की न विधि जानै साधना न सिद्धि कोऊ।
बावरो चहत तऊ नाथ को रिझावनो॥ 23॥

परम प्रकाश पुंज अगुण अरूप शिव।
सगुण स्वरूप लिंग रूप में विराजहीं॥
निगम कहत तेज प्रथम प्रसूत जाहिं।
कारण प्रभूत भूत पति एक राजहीं॥
भुवन अनन्त जासु अंश से प्रकट होत।
प्रणव निनाद ब्रह्मनाद साज साजहीं॥
सद्गुरु सीख सुनि ध्यावत त्रयम्बक को।
बावरे सहज भाव पावत स्वराजहीं॥ 24॥

नाथ उमानाथ हैं दयालु अति दीनन पै।
वेगहीं द्रवत सुनि करुण पुकार हैं॥
ध्यावत अघोर घोर संकट ग्रसित जीव।
पावत है त्राण प्राणपति को आधार हैं॥
लोक परलोक से विहीन छीन हीन मति।
बारेक कहत पाहि करत संभार हैं॥
दास दुःख दारिबे को विपति निवारिबे को।
बावरे के नाथ नाथ करुणावतार हैं॥ 25॥

मृत्यु से सभीत हो मृत्युंजय शरण जाइ।
पावत अभयदान निगम कहत है॥
अतिहो अधीर भवभीर से त्रसित जीव।
शिव को मनाइ उर आनन्द लहत है॥
पापिहुँ त्र्यम्बक को पावन प्रसाद पाइ।
यजन किये ते महापाप को दहत है॥
काल से बचाइ के कृपालु अपनाइ लेत।
बावरे जो ध्याइ पद पंकज गहत है॥ 26॥

जीव के सुकृत से सुगन्धित हैं तत्त्व जेते।
पुष्टि कर यावत त्रिलोक हितकारी हैं॥
यजन करत नित्य ताहिं सो त्र्यम्बक को।
मृत्यु से उबारत मृत्युंजय पुरारि हैं॥
फल ज्यों इंदारुन को बेलि से बिलग होत।
काल से छुड़ावैं तिमि कालदंड धारी हैं॥
अमृत स्वरूप देत दाह दुःख हरि लेत।
बावरे के नाथ भोलानाथ महतारी हैं॥ 27॥

नमो शम्भुनाथ सुखशान्ति के निधान देव।
नमो कल्याण रूप संत सुखकारी को॥
नमो ज्ञानदाता जनत्राता को नमस्कार।
नमो नित्य शंकर स्वरूप मदनारी को॥
नमो शिव शान्त रस करुणावतार प्रभु।
नमो आनंदकंद नाथ त्रिपुरारि को॥
नमो अखिलेश्वर विश्वेश्वर नमन कोटि।
करो स्वीकार देखि बावरे अनारी को॥ 28॥

एक अद्वैत देव कण कण में व्यापि रह्यो।
परम निगूढ़ भाव पावक ज्यों पानी में॥
आदि है न अंत विभु वैभव विराट रूप।
अज अविनाशी को प्रकाश वेद वाणी में॥
आत्मा अनन्त जीवधारि जड़ चेतन को।
भासत आभास भास बोध विज्ञानी में॥
जागृत स्वपन सुप्त विश्व तैजस प्राज्ञ।
बावरे विभासते तुरीय अभिमानी में॥ 29॥

भोक्ता औ भोग्य दोऊ प्रेरिता प्रकाश पाइ।
होत गतिशील जग जीव उपजत हैं॥
एक परतत्त्व जो विविध भाव धारि आइ।
सोई रुद्रदेव वेदवाणी ये कहत हैं॥
प्रभु को प्रभाव गुण महिमा स्वभाव जानि।
भेद में अभेद सत्त्व समुझि गहत है॥
बावरे द्रवत जब ईश ह्वै दयालु नेक।
पावत परमपद प्राणी जो चहत हैं॥ 30॥

सृष्टि के विकार भाव शिवा के विलास नित्य।
शिव के प्रमोद हेतु सृजति हरति है॥
एक मूल बीज से अनेक को पसारि देति।
ताहि में अहं मम भावना भरति है॥
महत आकाश मांहि भीति रंगहीन मातु।
परम विचित्र चित्रकारी जो करति है॥
बावरे रिझाइ परमेश को प्रसन्न जानि।
समिटि प्रपंच सब आपु में धरति है॥ 31॥

वाहन वरद वरदानी वरदेश्वर को।
बाघ छाल कटि वर विरुद विराजहीं॥
तन पै मसान की विभूति भूति भूतगण।
अहि अंग भूषण भो भाल शशि भ्राजहीं॥
कर में त्रिशूल संग डमरू वरद हस्त।
सीस जटाजूट अक्षमाल साज साजहीं॥
बावरे अनंग अरि किये अर्द्धंग अम्ब।
वेश है अभूत पै प्रभूत राज राजहीं॥ 32॥

धारिके विरंचि तनु विरचि अनन्त लोक।
हरिरूप धारि ताको पालन करत है॥
रुद्र ह्वै प्रगटि प्रलयंकर कराल काल।
भुवन अनन्त पल मांहि संहरत है॥
देव हैं अरूप पर त्रिविध स्वरूप मांहि।
भरि ढरकाइ पुनि ताहि को भरत हैं॥
बावरे अनीह नाथ इह जग कारण हैं।
जानत परम सोई भव से तरत हैं॥ 33॥

शीश पै त्रिपथगा को पावन प्रवाह बहै।
शीतल सुखद अघ ओघ हरि लेतु है॥
भल विधुबाल बनि मुकुट विराजि रह्यो।
चंद्रिका प्रसारि हरि ताप सुख देतु है॥
उज्ज्वल वरण तनु भूषण भुजंग राजै।
अरुण विशाल नेत्र करुणा निकेतु हैं॥
अद्भुत अनूप शोभा निरखि निहाल होत।
बावरे के नाथ भोलानाथ भव सेतु हैं॥ 34॥

भुवन अनेक धूरि सरिस जो सीस धारे।
सोई उर हार बनि राजत अनन्त है॥
भृकुटि विलास से प्रभव भव होत जाके।
सोहति सो अंक मांहि निगम भनन्त है॥
महाकाल पल में प्रपंच को निगलि जात।
तनिक तरेरि ताके कांपत सो अंत है॥
बावरे निगम नेति महिमा बखाने सोई।
भक्त हित हेतु भयो नाथ गिरि संत है॥ 35॥

जनम अनेक लगि सुकृत समूह करै।
तीरथ नहाइ देइ दान हीक भरि कै॥
तन को तपाइ बहु खाक में मिलाइ देइ।
करै यज्ञ याग वेद पाठ चित्त धरि कै॥
योग नित साधि लहै विविध समाधि गिरि।
कंदरा छिपाइ लोक वासना से डरि कै।
बावरे यतन कोटि कटै जीव पास नाहिं।
जौं लौं न निहारैं भोलानाथ कृपा करि कै॥ 36॥

भानु शशि पावक त्र्यम्बक स्वरूप सोहैं।
जगत् प्रकाश तेजपुंज के आधार हैं॥
पवन प्रवाह प्राण जीव अवलम्बन जो।
सोई अहिराज रूप बन्यो कंठहार है॥
बावरे अपस् रस देवसरि धार बहै।
वसुधा को सार अंग छाजै बनि छार है॥
डमरू आकाश शब्द स्रोत कर राजत है।
पंचमहाभूत भूतनाथ को शृंगार है॥ 37॥

प्रभु के त्रिलोचन त्रिविध कार्य साधक हैं।
सृजत अनन्त लोक पालि के हरत हैं॥
देखत रहत नित सकल अशुभ शुभ।
करम कलाप जीव जहाँ जो करत है॥
दांयी दयादृष्टि से सुबोध को प्रकाश करि।
बायें सुधा सींचि उर रस से भरत है॥
बावरे तनिक ताके लोचन तृतिय खोलि।
अमित कटाह अंड पल में जरत है॥ 38॥

विरचि त्रिदेव देव लोक लोकपाल बहु।
पुहुमि आकाश जग जीव को धरति है॥
सोइ परमेश्वरी प्राणेश को रिझाइबे को।
यतन अनेक बहु भांतिन्ह करति है॥
ताहि पै पसीजि नाथ रीझि के निहारि लेत।
प्रभु को प्रसाद पाइ मोद से भरति है॥
महिमा अनन्त गुण प्रभुता सुमिरि देव।
बावरा अबोध काह समुझि परत है॥ 39॥

धारी कमलासन बाघम्बर के आसन पै।
राजत हैं नाथ गिरिनाथ के शिखर पै॥
सेवत ऋषीश्वर मुनीश्वर सुरेश सुर।
ध्यावत विरंचि हरि याचक है हर पै॥
देवन्ह के देव महादेव हैं दयालु अति।
करत संभाल धाइ आइ दीन दर पै॥
बावरे की बेर काहे करत अबेर देव।
काह घटि गयो नाथ करुणा के घर पै॥ 40॥

अलख निरंजन हैं अंजन अतीत सदा।
लोकहित हेतु नाथ लेत अवतार हैं॥
अगुण अरूप अज निगम बखानैं जाहि।
सोई धरि देह होत सगुण साकार हैं॥
भृकुटि निहारि जाकी कांपत कराल काल।
शस्त्रधारि करैं सोई असुर संहार हैं॥
बावरे त्रिदेव देव बन्दना करत जाको।
सोई सर्वेश्वर हमारो रखवार हैं॥ 41॥

नमो परमेश प्रभु पुरुष प्रधान पति।
नमो सर्वेश्वर महेश्वर ईशान को॥
नमो अघहारी मदनारि को नमन कोटि।
नमो देव शासक प्रकाशक महान को॥
नमो प्रलयंकर शिवंकर नमन देव।
नमो भूतभावन निवासी श्मशान को॥
नमो भुवनेश करुणेश पद पंकज में।
बावरा नमत पशुपति भगवान् को॥ 42॥

नमो श्रुति सेतु वृषकेतु को नमस्कार।
नमो गिरि संत भगवंत पापहारी को॥
नमो वेदवाणी शूलपाणि को अनन्त बार।
नमो चंद्रभाल सुरपाल व्यालधारी को॥
नमो अखिलेश गिरिजेश को नमन सदा।
नमो जगदीश्वर जगत् हितकारी को॥
नमो विश्वनाथ दीनानाथ हैं अनाथ नाथ।
बावरा नमत नित देव दुःखहारी को॥ 43॥

बन्दन करत सद्गुरु के चरण रज।
नाथ चंद्रमौलि देव शंकर स्वरूप हैं॥
करुणा के धाम शिष्य शिशु ज्यों संभाल करैं।
बोध भरि देत बुद्धि अमित अनूप हैं॥
परम उदार तप तेज है प्रभाकर सों।
क्षमा के निधान प्रभु पुहुमि के रूप हैं॥
बावरे अनाथ को निहारि के सनाथ करैं।
प्रनत बनाइ देत योगिन को भूप हैं॥ 44॥

नमो गुरुदेव चंद्रमौलि के चरण नख।
चंद्र से बिखरि रही चंद्रिका प्रकाश सों॥
चिन्तन किये ते चित्त रहित कशाय होत।
मोह तम नाशै उर अन्तर आभास सों॥
जनम अनेक अघ ओघ को शमन करि।
पावन बनाइ देत तनिक सकाश सों॥
बावरे भुवन तिहुँ विरुद विराजत है।
सुकवि बखानैं यश विमल आकाश सों॥ 45॥

नमन अनन्त गुरुदेव पद पंकज में।
बंदन करत तासु पावन पराग को॥
सुमिरे सकृत चित्त सत से सजाइ देत।
अमर बनाई मति तिय के सुहाग को॥
तिलक लगाय तनु त्रिगुण अतीत होत।
सेवन किये ते देत दिव्य अनुराग को॥
धारत तनिक हिय आंखिन में अंजन सो।
बावरे मिटाई देत भव के विभाव को॥ 46॥

शिव निराकार गुरु मूरति साकार धारि।
प्रगटे परावर पे करुणा करन को॥
बोध को प्रकाशी तम भेद भ्रम दूरि करि।
मोह को मिंटाई त्रयताप के हरन को॥
श्रवण सुयश सुनि शरण जो आई पर्‌यो।
लिये उर आस भव बारिधि तरन को॥
दया के निधान गहि बांह अपनाइ लेत।
राखत संभारि देइ सम्बल चरन को॥ 47॥

आदि गुरु साम्ब सदाशिव है कृपालु अति।
प्रगट्यो है नाथ चन्द्रमौलि रूप धारि कै॥
बारेहि ते देव निज जानि अपनाइ लियो।
दियो ज्ञान दान करि करुणा निहारि कै॥
साधन सजाइ सब कियो निर्देश प्रभु।
जीव को जगाऊ योग बोध को पसारि कै॥
पाई सीख धारि सिर जीवन सफल भयो।
बावरा विभोर गुरु महिमा विचारि कै॥ 48॥

नमो त्रिभुवन गुरु त्रिगुण अतीत प्रभु।
त्रिविध स्वरूप जग पालत हरत हैं॥
स्वयं प्रभूत वेद प्रथम प्रसूत कहै।
ताहि को निहारि नित्य ज्ञान से भरत हैं॥
अमित महान नेति महिमा बखान करैं।
शरण गए से जड़ जीव उद्धरत हैं॥
पाप ताप दूरि करि भूरि सुख सम्पति दे।
बावरे जो नाइ माथ पायन परत हैं॥ 49॥

वंदन करत सदा ईश पद कंजन में।
शरणागत वत्सल कृपालु सुखदानी को॥
आरत की कातर पुकार सुनि दीनानाथ।
धाय के बचाइ लेत अधम अज्ञानी को॥
क्रूर खल कुमति ग्रसित हो त्रसित जीव।
पाहि कहि बारेक पुकारे शूलपाणि को॥
सुनत पसीजि जात जानि जन रीझि जात।
बावरे सजाइ देत साज सब ज्ञानी को॥ 50॥

गिरिजा के नाथ हैं कृपालु अति दीनन पै।
दीनबंधु नाम सुनि दीनता डरत है॥
याचक की याचना को अंत होत याचत ही।
करुणा की कोर देव जाहि पै परत है॥
बावरा विचारो बालपन से दुआरे परयो।
नाथ गुणगाइ नित उदर भरत है॥
ऐहो विश्वनाथ नाथ धाइ कै संभालु आइ।
कलि को प्रभाव देखि दास हहरत है॥ 51॥

ऐहो दीनानाथ दुनि दीन औ अनाथ देखि।
व्यथित हृदय कछु कहिबो चहत है॥
आप माई बाप जग जीव सचराचर को।
सुकवि बतावैं वेद वाणी यह कहत है॥
सुख के निधान की संतान दुःख सिन्धु मांहि।
डूबि उतरात बहु यातना सहत है॥
कैधों वह झूठो जाहि आगम निगम कहै।
बावरे के झूठो यह देखि जो परत है॥ 52॥

ब्रह्म एक सत्य है असत्य जग जीव सभी।
कहते जो नाथ मात्र बुद्धि का विलास है॥
करुण पुकार चीत्कार सुनि आरत की।
कहैं ताहि मिथ्या यह कैसो उपहास है॥
पीड़ा पहुँचाती मुझे बातें पण्डितों की नहीं।
तेरी निठुराई देखि अन्तर उदास है॥
बाप विश्वनाथ ताको सुवन अनाथ लखि।
समुझि न आवै कछु बावरा निराश है॥ 53॥

आगम निगम तन्त्र कहते पुराण सभी।
साम्ब सदाशिव ही जगत पितु मात है॥
दियो गुरु सीख सब संत समुझाइ कह्यो।
कारण अव्यक्त व्यक्त कार्य रूप जातु है॥
सत्य श्रुति वाणी संत वाणी है असत्य नहीं।
तऊ यह बावरो नहिय पतियात है॥
नाथ सुख सिन्धु से तरंग दःुख रूप उठै।
कौन यह मानै काको सुनत सुहात है॥ 54॥

पितु के प्रकाश मातु उदर विकास करि।
शिशु रूप धारि जीव आयो नाथ जग में॥
देखत सुनत गुणि समुझि गहत ताहि।
कहत करत सोई आपु पग पग में॥
वासना सहज रस रूप के उपासना की।
चाहत लहन ताहि जीवन के मग में॥
दया के निधान बाप कारण बुझाइ देहु।
बावरे बराक किमि आई पर्यो ठग में॥ 55॥

परम प्रशान्त गिरि राज के शिखर पर।
गिरिजा प्रसाद आप ध्यान में निरत है॥
स्वामी से विहीन दिशाहीन पशुभाव लीन।
जाको जोई भावे जीव सोई सो करत है॥
मातु महाकाली काल कौतुक विलोकत है।
सबल अबल पति प्राण को हरत है॥
नीति की न रीति रही प्रीति औ प्रतीति कहुँ।
बावरा अनाथ गति देखि हहरत है॥ 56॥

प्रभु पाप मोचन त्रिलोचन को बन्द कियो।
दशा जग जीवन की देखि नही जात है॥
शासक सबल समरथ रत स्वारथ में।
नर रूप दयाहीन दानव दीखात है॥
इन्द्रिय उदर पूरी मानि पुरुषारथ को।
करम धरम की कहानी कही जात है॥
कोऊ जगदीश्वर जगत प्रतिपालक है।
बावरे विचारि नाहिं हिय पतियात है॥ 57॥

देखु दीनबन्धु दुनी दीन है पुकारत है।
दयाहीन देव कोऊ सुनत गुहार ना॥
सुर सुरपति लोकपाल दिगपाल सबै।
यज्ञ बलि चाहत हैं भावत जुहार ना॥
श्रुति सीख सुकृत पै पाप को पाखण्ड छायो।
एक अवलम्ब देव नाम को पुकार ना॥
बावरे के नाथ भोलानाथ नाथ दीनन को।
आपु ही बचाओ दूजो करत संभाल ना॥ 58॥

रुद्र को प्रचण्ड कोप मानस में व्यापि जन।
करत संहार युद्ध रूप में पसरि के॥
जनम मरण क्रम प्राकृत प्रवाह कियो।
जीव के विकास हेतु करुणा को करि के॥
पुण्य के प्रताप जीव शिव को प्रसाद लहै।
कारण विनाश पाप जानु चित्त धरि के॥
बावरे दुकाल माहि एक ही धरम व्रत।
गहु उमानाथ पद पंकज सुमरि के॥ 59॥

जगत् दुःखालय में सुख को आभास होत।
प्रभु की कृपा को सोऊ सहज प्रसाद है॥
काल को प्रताप जहाँ पाप को प्रसार कियो।
यातना प्रधान कहाँ जीवन में स्वाद है॥
मानव समूह गहि दानव की वृत्ति नित्य।
हिंसा में प्रवृत्ति चहुँ ओर अवसाद है॥
एक अवलम्ब साम्ब शिव की शरण जाइ।
बावरे नसाइ जग जीव को विषाद है॥ 60॥

निराकार निर्गुण निरंजन निरीह शिव।
भक्त हित हेतु नाथ लेत अवतार हैं॥
सृष्टि में विशिष्ट कार्य कारण उपाइ कोऊ।
अम्बिका विनोद हेतु करैं खिलवार हैं॥
जीव को जनमि ताहि प्रेरणा प्रदान करि।
घोर तप तेज को करत विस्तार हैं॥
बावरे वरद वर देइ शक्ति से सजाइ।
करैं तिहुँ लोक तासु प्रभुता प्रसार हैं॥ 61॥

नाथ को प्रसाद लघु जन्तुहुँ महान बनै।
महा अभिमान मद मोह में परत है॥
वासना ग्रसित तिहुँ लोक को त्रसित करै।
भूलि पशु भाव पति भाव को धरत है॥
बावरे बिसारि प्रभु प्रभुता पसारि निज।
ईश बनि आपु देव भाग को हरत है॥
पाप को प्रताप सुर साधुन को ताप देत।
श्रुति पथ हास त्राहि वसुधा करत है॥ 62॥

नाथ खिलवार में विकार को निहारि तब।
लेत अवतार बहु कौतुक करत हैं॥
जारत कटाह अण्ड अम्बक तृतीय ताके।
सोई शस्त्र धारि युद्ध भूमि में लरत हैं॥
दनुज संहारि श्रुति मारग संवारि जग।
तिहुँ लोक पावन सुयश पसरत हैं॥
मुनि गुण गान करैं सुकवि बखान करैं।
बावरे सो गाइ जन भाव से तरत हैं॥ 63॥

नाथ तव गाथ एक युग की है बात नहीं।
युग प्रति पावन कहानी यह चलत है॥
चरित विचित्र लखि महिमा महान सुनी।
शिव बोध जीव अहं भावना गलत है॥
देव मुनि मानव पिशाच यज्ञ दानव को।
प्रभु के दुआरे सभी याचना फलत है॥
बावरे अचाह चाह ईश पद कञ्जन को।
ध्यावत हिये में प्रेम पावन पलत है॥ 64॥

हेतु अवतार को अनेक नाथ एक नहीं।
आगम बतावैं भक्त भावना प्रधान है॥
देखि निज दास की प्रतीति औ पुनीत प्रीति।
ध्यान नही लावैं आप श्रुति को विधान है॥
धारत विविध रूप करत अनेक कार्य।
थकित विलोकि होत सुकवि सुजान है॥
देव महादेव के हैं पावन चरित्र एते।
कहाँ लौ बखानै ताहि बावरा अजान है॥ 65॥

गौतम सुता को देखि पावन कठोर तप।
है के अति द्रवित दरश नाथ दीन्हो है॥
याचना करी है पुत्र हेतु परमेश्वर से।
एवमस्तु भाषि के प्रसन्न ताहि कीन्हो है॥
करुणा निधान आइ अञ्जना की कोख माँहि।
सुवन स्वरूप तासु आपु धरि लीन्हो है॥
नाम हनुमान मान हरें देव दानव को।
बावरे अनाथ को सनाथ करि दीन्हो है॥ 66॥

खेलत निरंजन हैं अंजना की गोद माँहि।
देखत त्रिदेव देव भाग्य को सराहि के॥
गावत ऋषीश्वर मुनीश्वर विमल यश।
ब्रह्म कुल धन्य भयो आनन्द मनाइ के॥
मुदित पवन देखि वसुधा प्रसन्न भई।
नृत्य करैं अप्सरा प्रसून बरसाइ के॥
बावरे के नाथ शिशु रूप में विराजि रह्यो।
बिरुद बखानैं वेद बंदी रूप आइके॥ 67॥

सुनत सुहात पै बखानि नहीं जात देव।
किया जो चरित्र आञ्जनेय के स्वरूप में॥
दियो वरदान ताहि प्रगटि प्रमाण कियो।
अद्भुत अनूप तनु धारि शिशु रूप में॥
पावन प्रताप को प्रकाशित करन हेतु।
मारिके छलांग भानु लियो गाल गूप में॥
देवन विनय सुनि मुक्त मार्तण्ड कियो।
बावरे के नाथ पति पायो सुर भूप में॥ 68॥

गुणातीत ईश अज गुण को स्वीकार कियो।
बाल केलि करि पितु मातु सुख दीन्हो हैं॥
लोक वेद रीति से पुनित व्रत वन्दित है।
ज्ञान निधि भानु को ग्रहण गुरु कीन्हो हैं॥
साङ्ग वेद राशि धारि रवि को प्रसन्न कियो।
दक्षिणा में तासु सुत हित व्रत लीन्हो हैं॥
ऋष्यमूक आइ सुर कारज संवारिबे को।
बावरे के नाथ राम नाम रस भीन्यो हैं॥ 69॥

देइ वरदान लघु जीव को महान कियो।
रावण समान जग विदित प्रतापी को॥
प्रभुता पसारी तिहुँलोक को स्वबस करि।
महामोह आइ ग्रस्यो देव परितापी को॥
अति मदमात्यो मातु सिय को हरण कर्‌यो।
नाथ समुझायो जाइ विश्व संतापी को॥
सीख नही मान्यो देव लंक को विध्वंस करि।
बावरे मिलाइ खाक दण्ड दियो पापी को॥ 70॥

अक्षर परम कार्य कारण अतीत ब्रह्म।
प्रकट्यो भगत हित नर तनु धारि के॥
राम सिय रूप छवि अमित अनूप सोहै।
विश्व को विमोहत हैं लीला विस्तारि के॥
करत चरित्र अति पावन विचित्र प्रभु।
श्रुति पथ थापैं जग कीरति पसारि के॥
बावरे के नाथ नाथ नाम में निरत नित।
देव हित साध्यो राम कारज संवारि के॥ 71॥

लांघि के अगाध सिन्धु राक्षसी विनाश करि।
जाइके सुबेल काल कंटक निवारी है॥
लंक को जलाइ मद रावण को चूर कियो।
राम यश गाइ सीय शोक से उबारी है॥
जनक सुता की सुधि लाइके बचायो कपि।
साधि प्रभु काज कियो देवन सुखारी है॥
बावरे के नाथ रघुनाथ के सहायक हैं।
राक्षस संहारि भूमि भार को उतारी है॥ 72॥

सिंधु सेतु बांधि नाम महिमा प्रकट कियो।
साधन बतायो भव वारिधि तरन को॥
लाइ के संजीवनी बचाइ के लखन प्राण।
प्रभु पन राख्यो महि भार के हरन को॥
पैठि के पाताल अहि रावण सकुल हत्यो।
पावन सुयश तिहुँ लोक प्रसरन को॥
थापि राम राज्य जग जीव को स्वराज्य दियो।
बावरे स्वदास पर करुणा करन को॥ 73॥

शक्ति भक्ति ज्ञान के निधान हनुमान रूप।
धारि नाथ ऋणियां बनायो सीयराम को॥
शक्ति को प्रयोग बोध युक्त कर्मयोग सिद्ध।
महिमा प्रकाश दास्य भाव राम नाम को॥
पावन चरित गाइ नाम में लगाइ चित्त।
तासु हित खोलि दियो मुकुति के धाम को॥
बावरे के नाथ आञ्जनेय हैं कृपालु ऐसे।
पूरन बनाइ देत सन्त निष्काम को॥ 74॥

नाम है अनन्त नाथ रूप को है अन्त नहीं।
गुण के निधान गुणातीत शिव धाम हैं॥
याचना करत सुर असुर उपासना कै।
पावत अभीष्ट फल होत पूर्ण काम हैं॥
काशी में मरत जन्तु पावत परम गति।
सोऊ परमेश्वर कृपा को परिणाम है॥
'ववरे के नाथ भोलानाथ की शरण जाइ।
वासना नसाइ हिय होत अभिराम है॥ 75॥

नमो सोमनाथ सोम विपति विनाशक को।
रोग पाप नाशक प्रकाशक पुरारी को॥
प्रभु की प्रभा से है प्रभासित प्रभास क्षेत्र।
पावन परम प्रिय धाम है मुरारी को॥
देव ज्योति पुंज लिंग रूप में विराजमान।
अर्चना किये ते ताप हरत दुखारी को॥
भुक्ति मुक्ति दाता नित्य त्राता निज दासन को।
देहु दया दान नाथ बावरे भिखारी को॥ 76॥

छोड़िके कैलाश श्री सैल पै निवास कियो।
सुवन सनेह नाथ लायो यहाँ पल में॥
पावन प्रदेश गिरि कानन पुनीत करी।
करै गुणगान देव सरि कल-कल में॥
मल्लिका है मातु बाप अर्जुन कहायो आप।
देत पुत्र दान देव याचना के फल में॥
बावरे अलिङ्ग ज्योति लिङ्ग रूप धारि आपु।
आइके विराजै साथ अम्बिका सुथल में॥ 77॥

वेद निष्ठ विप्रन की आरत पुकार सुनि।
प्रगट्यो हैं नाथ महाकाल रूप धारि के॥
दूषण निशाचर को सदल संहार करि।
दियो अभय दान निज भक्तन उबारि के॥
कृपा बरसायो पुरी पावन अवन्तिका पै।
लोक हित हेतु ज्योतिर्लिंग में पधारि के॥
काल से ग्रसित भव व्याल से त्रसित जन।
बावरे संभारैं ताहि प्रभुता पसारि के॥ 78॥

विन्ध्यगिरि कियो तप पावन कठोर अति।
लालसा हिये में लिये नाथ के दरश की॥
परम दयालु परमेश्वर प्रकट होइ के।
कर्यो पूर्ण काम पद पंकज परस की॥
दियो वरदान लिङ्ग रूप में विराजिबे को।
धन्य भयो विन्ध्य नहीं उपमा हरष की॥
बावरे ओंकार रूप ईश त्रिभुवन गुरु।
बोध भरि देत भक्ति भावना स्वरस की॥ 79॥

जग हित हेतु हरि युगल स्वरूप धारि।
पावन बनायो हिम गिरि के शिखर को॥
परम तपस्वी ऋषि रूप में नारायण हैं।
शिव को आराधैं नित्य साथ लिये नर को॥
साम्ब शिव अमित प्रसन्न ह्वै दरश दियो।
ज्योति लिङ्ग थाप्यो प्रभु आपु चंद्रधर को॥
देत फल चारि करि करुणा केदारनाथ।
दरस परस पूजि ध्यावै जो हर को॥ 80॥

दया दरसाइ देव नृपति सुदक्षिण पै।
आइके उबारि लियो भीमासुर ताप से॥
मारिके हुंकार नाथ दानव संहार कियो।
देव मुनि मानव बचायो संताप से॥
याचना करी है लिङ्ग रूप में विराजने की।
डाकिनी प्रदेश को पुनित करि आप से॥
महाकोशी तीर प्रभु आपु भीम शंकर ह्वै।
बावरे आराधक को मुक्त करै पाप से॥ 81॥

पुरुष प्रधान परमेश्वर प्रकाश पाइ।
प्रगट्यो आकाश में आधारहीन पाइके॥
चाहना करी है निज कारण को जानिबे को।
पायो आदेश तप करौ चित्त लाइके॥
साधन बिना न कोऊ साधना न सिद्धि होत।
थल बिनु तप कौन भांति करौ जाइके॥
बावरे आधार निराधार को हैं साम्ब शिव।
दियो अवलम्ब दिव्य धाम उपजाइके॥ 82॥

परम प्रसन्न शिव याचना विनीत सुनि।
दिव्य निज तेज से प्रकाश कियो काशी को॥
पंचकोशी पावन प्रकट तप हेतु करि।
सुथल बनाइ दियो हरि अविनाशी को॥
अमित कठोर तप श्रम स्वेद पूरि नभ।
कारण अगाध महासिन्धु जलराशि को॥
बावरे प्रवाह मांहि अस्थिर बिलोकि प्रभु।
थाप्यो त्रिशूल पांहि पावन प्रकाशी को॥ 83॥

जहाँ हरि तप करि हर को प्रसन्न कियो।
सोइ अविमुक्त धाम पंचकोशी काशी है॥
शिव के त्रिशूल पै विराजित प्रलय मांहि।
ताते यह देवपुरी पावन अविनाशी है॥
प्रभु पुरुषोत्तम की प्रार्थना स्वीकार करी।
साम्ब सदाशिव यहाँ नित्य के निवासी हैं॥
बावरे अलिङ्ग लिङ्ग रूप में विराजमान।
नाथ विश्वनाथ योग बोध के प्रकाशी हैं॥ 84॥

देव मन भावन है परम पुनीत धाम।
ज्ञान गुण राशि काशी प्रिय हरिहर की॥
ज्योति लिङ्ग रूप में विश्वेश्वर विराजै जहाँ।
उपमा कहाँ है ऐसे पावन नगर की॥
धर्म को है सार सत्य समता है मोक्ष सार।
तीरथ को सार तिमि पुरी देववर की॥
बावरे अचर चर प्राणी यहाँ प्राण तजि।
पावत परम गति कृपा चन्द्र धर की॥ 85॥

गौतम ऋषि की अति पावन तपस्या देखि।
भक्त हित हेतु भयो प्रगट पुरारी हैं॥
पाप ताप हरि हर सान्त्वना प्रदान कियो।
सुरसरि धार लायो लोक हितकारी हैं॥
नाथ है त्र्यम्बक स्वरूप ज्योति लिंग रूप।
दीन दुःख दारन को व्रत नित्यधारी हैं॥
जीव को सुगति देत अघ ओघ हरि लेत।
बावरे के नाथ नाथ करुणा तुम्हारी है॥ 86॥

घोर तप कियो नाथ राक्षसेन्द्र रावण ने।
काटि कै चढ़ायो शीश प्रभु के चरण में॥
देव वर पाइ तिहुँ लोक को स्ववश करि।
बाहु बल तौलि महाभूधर धरण में॥
याचना करि है गढ़लंक में पधारने की।
लिङ्ग रूप साजि चल्यो साथ लै करन में॥
बावरे के नाथ चिताभूमि में विराजि गयो।
निरत वैद्यनाथ जन आपदा हरण में॥ 87॥

नाथ भक्त सुप्रिय की आरत पुकार सुनि।
प्रगटि बचाइ लियो दारुक के भय से॥
असुर संहारि निज जन को उबारि देव।
और्व मुनि शाप भयो सत्य दुष्ट क्षय से॥
अम्बिका सहित नाथ साथ में प्रमथ गण।
दारु वन आइ बस्यो सदय हृदय से॥
बावरें के ईश नागेश्वर स्वरूप मांहि।
करत आराधक को भूषित विजय से॥ 88॥

देव सर्वेश्वर श्री राम की आराधना से।
परम प्रसन्न भयो करुणा निधान हैं॥
सिन्ध सेतु बाँधि प्रभु प्रभुता प्रकाश कियो।
लिङ्ग थापि दीन्ह्यो नवीन अभिधान हैं॥
राम के हैं ईश्वर रामेश्वर कहेंगे लोग।
दरश किये ते काटै कर्म विधान हैं॥
गंगा जल लाइके चढ़ाइ ईश पूजिहैं जो।
बावरे सो पइहैं मोक्ष पद जो प्रधान हैं॥ 89॥

सिंधु तीर थापि लिंग सविधि समर्चना कै।
याचना करी है देव मुनि के अभय की॥
राक्षस संहारि महि भार के उतारिबे को।
नाथ वर दीन्ह्यो गढ़लंक के विजय की॥
ईश को आशीष पाइ राम पूरण काम भयो।
कीरति ललाम छाई तिहुँलोक जय की॥
बावरे अराधि रामेश्वर प्रसाद पाइ।
लहै सायुज्य जीव शिव में विलय की॥ 90॥

घुस्मा की भक्ति और शक्ति है अनन्यता में।
सिद्ध कियो नाथ तासु सुवन जिआइ के॥
लोक हित हेतु लिंग रूप में विराजि गयो।
देव गिरि निकट शिवालय में आइके॥
नाम है अनन्त जाकी महिमा बखानै वेद।
होत है प्रसन्न घुस्मेश्वर कहाइ के॥
बावरे के नाथ पाप ताप सब दूरि करैं।
वन्दन करै जो भोलानाथ पद ध्याइके॥ 91॥

नमो सोमेश्वर हरत शाप पाप रोग।
नमो मल्लिकार्जुन देवेश्वर ईशान को॥
नमो महाकाल भव जाल को हरन हार।
नमो ओंकार परमेश्वर महान को॥
नमो हिमगिरि के निवासी केदारेश्वर को।
नमो भीमशंकर भगेश भगवान् को॥
नमो काशीश्वर विश्वेश्वर नमन कोटि।
बावरा नमत शिव करुणा निधान को॥ 92॥

नमो उमा अम्बक त्र्यम्बक नमन कोटि।
नमो लंकेश के उपास्य वैद्यनाथ को॥
नमो नागेश्वर महेश्वर नमस्कार।
नमो रामेश्वर आराध्य रमानाथ को॥
नमो घुस्मेश्वर देवेश्वर कृपालु देव।
नमो विश्वेश्वर नमन विश्वनाथ को॥
ज्योति लिङ्ग द्वादश को नमन अनन्त बार।
बावरा नमत नित नाथ नाथ भोलेनाथ को॥ 93॥

देव हित कश्यप की पावन आराधना से।
परम प्रसन्न हुए नाथ शूलपाणि हैं॥
दियो वर ताहि सुर संकट मिटाइबे को।
पुत्र रूप आये आपु महावरदानी हैं॥
सुरभी के कोख से एकादश स्वरूप धारि।
असुर संहारि मेट्यो पाप की निशानी है॥
बावरे के नाथ भोलानाथ हैं अनाथ नाथ।
सुकवि सराहैं वेद महिमा बखानी है॥ 94॥

नमन कपाली को नमत नित्य पिंगल को।
भीम को नमन विरूपाक्ष को नमन है॥
नमन विलोहित को शास्ता नमन कोटि।
नमो अजपाद दोष दारिद दमन हैं॥
नमन करत पद पावन अहिर्बुध्न्य।
शम्भु को नमन पाप ताप के शमन हैं॥
बावरा नमत नित चंड को अहर्निशि।
नमो भव ईश अघ अवगुण शमन हैं॥ 95॥

नमो परमेश्वर परम सुख सिन्धु देव।
मोह मद नाशक महेश को नमन है॥
शिव शोकहारी को नमन शत कोटि बार।
वासना विनाशी त्रय ताप के दमन हैं॥
यज्ञ भाग भोगी महायोगी को नमन नित्य।
ओज बल दाता नाथ शंकट शमन हैं॥
महा भव व्याल को है गारुणी कृपा निधान।
बावरे अनाथ नाथ गिरिजा रमन हैं॥ 96॥

ओदन है ब्रह्म और क्षत्र महा अन्तक को।
मृत्यु उपसेचन ये निगम कहत है॥
सोउ विकराल काल भृकुटि निहारि जासु।
भुवन अनन्त पल मांहि संग्रहत है॥
ताकि महा महिमा को जानत अजान तेउ।
बिन्दु कहो काह सिन्धु थाह को लहत है॥
नाम रूप लोक में आलोक परमेश्वर को।
बावरे सो ताहि कहाँ ढूँढिवो चहत है॥ 97॥

नमो पंचाक्षर प्रबोधक परम तत्त्व।
पावन प्रकाशक है वाचक परेश को॥
प्रणव स्वरूप शब्द रूप परमेश्वर को।
चिन्तन किये ते नित्य नाशत कलेश को॥
प्राकृत प्रपंच के प्रवाह से विमुक्त करि।
जापक को लाइके मिलावत महेश को॥
जनम अनेकन को करम कषाय काटि।
बावरे बिठाइ देत धाम गिरिजेश को॥ 98॥

नमन अनन्त उमानाथ पदकंजन में।
करुणानिधान भगवान मदनारी हैं॥
आरत की कातर पुकार सुनि दीनबंधु।
आइके संभारि जन विपति निवारि हैं॥
बोध से विहीन मतिहीन पापपीन जेऊ।
ऐसेऊ अनाथन को नाथ त्रिपुरारि हैं॥
बावरे सुयश सुनि शरण जो आइ परयो।
लेत अपनाइ देव करुणा तुम्हारी है॥ 99॥

विधि के विधाता वरदाता देव दानव के।
जगत के त्राता नाथ गिरिजा रमण हैं॥
मेटिके कुअंक भाल सुबस बसाइ देत।
अधम उधारि पाप ताप के शमन हैं॥
प्रणव पंचाक्षर को पावन प्रकाश पाइ।
पतित पुनीत होत तारन तरन हैं॥
बावरे के नाथ भोलानाथ पद पंकज में।
करत अनन्त बार कोटिन नमन है॥100॥

प्रभु की महानता और लघुता निचारि निज।
साहस न होत नाथ रावरो कहाइए॥
सृष्टि है अनन्त याको दीखत न अंत कहुँ।
देव हैं अनेक कहाँ कहाँ सिर नाइए॥
देखि दुःखी दीन हीन जानिके अनाथ नाथ।
ठाहर न देत कोऊ कहाँ कहाँ जाइए॥
बावरे अनाथन्ह को नाथ विश्वनाथ एक।
सुनिके शरण आयो मोहि अपनाइए॥101॥

जीवन की अणुता औ विभुता परेश्वर की।
देखि दुहुँ ओर होत अन्तर निराश है॥
कहाँ तो अनन्त ब्रह्माण्ड के अधिप देव।
कहाँ लघु पिंड यह करत प्रकाश है॥
भेद है महान पर गुण को समान देखि।
निगम बतावै जीव शिव को आभास है॥
बावरे समुझि सुनि नातो विश्वनाथ साथ।
ढाढ़स बंधत हिय होत उल्लास है॥102॥

बारिद से बूँद जैसे किरण प्रभाकर सों।
विस्फुलिंग आगि सों अनन्त रूप जात है॥
शिव के प्रकाश तिमि जीव को जनम होत।
अम्बिका प्रसाद जात जगत जमात है॥
आगम बतावैं सभी संत समुझाइ कहैं।
सदगुरु सीख सुनि अन्तर जुड़ात है॥
बावरे के माई बाप साम्ब शिव जानि जीय।
लघुता बिसारि होत प्रभुता प्रभात है॥103॥

हौं तो देव अबुध प्रबुध मेरो माई बाप।
आप न सुनैंगे तो कहौंगो कहाँ जाइ कै॥
हारि पर्‌यो जग में भटकि भूलि रावरो को।
पायो नहीं ठांव कहुँ दीनता दिखाइ कै॥
नाथ विश्वनाथ की है संतति अनाथ देखि।
करैं उपहास काह कहौं समुझाइ कै॥
बावरा अनारी पर्‌यो शरण तिहारी आय।
करत प्रणाम कोटि माथ महि नाइ कै॥104॥

नमन अकार को जो व्यापक आधार बनि।
आखर उपाइ देत जीव को सुमति है॥
नमन उकार को जो चेतना जगाइ देत।
शक्ति से सजाइ सचराचर की गति है॥
नमन मकार को जो परम विराम शिव।
नमो अर्धमात्र सोम सुधा सरसति है॥
बावरा नमत नादरूप परमेश्वर को।
चाहत अनाथ नाथ तेरो पद रति है॥105॥

प्रखर प्रबोध परतत्त्व को प्रदान करि।
प्रभुता परेश की प्रकाशित करत है॥
प्रकृत प्रपंच के प्रवाह से परे हो सदा।
जापक हिये में ऐसी भावना भरत है॥
नव नव रूप हैं प्रकृष्ट परमेश्वर को।
ताते यह विश्व सदा नूतन रहत है॥
बावरे प्रणव शब्द रूप सर्वेश्वर को।
वन्दन करत कोटि हिय में धरत है॥106॥

नमन अनन्त परमेश पद पंकज में।
नमो वामदेव देव नमो सद्यजात को॥
नमो तत्पुरुष प्रधान के प्रकाशक को।
नमन अघोर घोर तम के प्रभात को॥
नमन इशान भगवान को नमन कोटि।
नमो प्रमथेश देव पतिगण व्रात को॥
नमो अखिलेश्वर विश्वेश्वर महेश्वर को।
बावरा नमत नित्य लोक पितु मातु को॥107॥

नमो हिमगिरि कैलाश को नमन नित्य।
सा‌म्ब सदाशिव जहाँ करत विहार हैं॥
नमो धर्मध्वज हैं धरम धुरीन प्रभु।
ज्ञान जल जलनिधि नाथ श्रुति सार हैं॥
नमो नन्दीश्वर हैं वाहन त्रिलोचन को।
नमो अहिराज सदा शिव के श्रृंगार हैं॥
नमो भूतनाथ उमानाथ पद पंकज में।
बावरा करत बारम्बार नमस्कार है॥108॥

नमो बाघम्बर को अम्बर बनायो प्रभु।
नमो गंगाधर शीश नमो चन्द्रभाल को॥
नमो जग पूषण विभूषण विभूति अंग।
नमो नीलकंठ नाथ नमो महाकाल को॥
नमन त्रिशूल को हरत त्रयशूल सदा।
नमो श्रृंगी डिंडिम नमन अक्षमाल को॥
नमो भूतगण भूतनाथ के प्रथम गण।
बावरा नमत नित्य संत सुरपाल को॥109॥

बार बहु आरत पुकारि कह्यो दीनानाथ।
आपनो ही जायो जानि मोहि अपनाइये॥
निगम बतावे प्रभु आपु मेरो माई बाप।
दूसरे दुआरे देव कहौ कहाँ जाइये॥
वासना नहीं है कोउ करम उपासना की।
चाहना नहीं है यहाँ और कछु पाइये॥
बावरा अजान है सुजान करुणानिधान।
देहु वरदान नित्य नाथ गुण गाइये॥110॥

साम्ब सदाशिव के प्रसाद सों प्रकाश पाइ।
मिट्यो तम तोम नव जीवन प्रभात भो॥
सुमति सयानी सत असत को बोध पायो।
भयो भ्रम दूरि पाप ताप को विघात भो॥
सद्गुरु कृपा से शिव शतक सरूप मांहि।
बावरे हिये में भक्ति रस को प्रपात भो॥
गाइहैं समुझि सुनि ध्याइहैं सदाशिव जो।
ताहि मुद मंगल को मूल पारिजात भो॥111॥

॥ दोहा॥

१. कृपासिंधु सुखधाम शिव महिमा अमित अपार।
अति लघु मति हौं बावरो किमि कहि पावउँ पार॥
२. बार-बार विनती करूँ धरूँ चरण पर शीश।
करि करुणा गिरिजा रमण देहुँ नाथ आशीष॥
३. आगम निगम पुराण मत सकल शास्त्र को सार।
शतक समर्पित करत हौं नाथ करहुँ स्वीकार॥
४. रचित बावरा शिव शतक सद्गुरु कृपा प्रसाद।
पढ़ै सुनै समुझै गुनै मेटे सकल विषाद॥
५. शतक भाव चिन्तन किए हिये राखि विश्वास।
साम्ब सदाशिव कृपा से कटि जाइए भव पास॥

इतिश्री सद्गुरु कृपा प्रसादेन विश्वात्मा बावरा
विरचित श्री शिव शतक सम्पूर्णः

हमारे प्रकाशन

शक्ति तत्त्व बोध
आपकी अपनी बात
गीता ज्ञान विज्ञान योग
श्री हनुमत विनय पच्चीसी
श्री चण्डिकाशतक • श्री श्यामशतक
मानस में धर्मरथ • रामो विग्रहवान् धर्मः
मानस महाकाव्य में नारी • गीता तत्त्व बोध
क्या वर्ण-व्यवस्था अभिशाप है ? • राम नाम महिमा
मानस के मोती • जीवन विज्ञान • भारत की आत्मा
योगाकुंर • साधना सूत्र • गीता कर्म विज्ञान • समाधान
तत्त्व चिन्तन • सन्त सन्देश • भक्ति दर्शन (नारद भक्ति सूत्र)
विश्व को हिन्दुओं का योगदान • मानस में वैदिक सिद्धान्त
सन्त लक्ष्ण • श्री हनुमत हृदय • संस्कृत भाषा का महत्व
श्रीमद्भगवद्गीता धर्म विज्ञान भाष्य (अध्याय १ एवं २)
ब्रह्मविद्या विज्ञान-प्रथम • ब्रह्मविद्या विज्ञान—द्वितीय
नारी ! तुलसी की दृष्टि में • शिव तत्त्व बोध
हिन्दू धर्म सूत्र • गीतोक्त बुद्धियोग
चंडी दी वार (भगवती की स्तुति)
सहज समाधि भली • योग पथ
काव्य सुधा • श्री शिव शतक
How to be a Yogi • Towards Divinity
Yoga for life • The Hindu & its way of life
Essence of Gita • Basic Principles of Yoga
Lord Hanuman-Our Ideal • Meditation Technique
Science of the Absolute Knowledge (Commentary on Ishopanishad)

दिव्यालोक मासिक पत्रिका

सद्विचारों के प्रचार और प्रसार की मासिक पत्रिका





दिव्यालोक प्रकाशन
ब्रह्मर्षि आश्रम, विराट् नगर, पिंजौर (हरियाणा)